शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

टूटते हुए पारिवारिक संबंधों का दस्तावेज आधे-अधूरे नाटक

मनोज सामा पाडवी (शोधार्थी)
ग.तू. पाटील महाविद्यालय
नंदुरबार, महाराष्ट्र, भारत

आज मानवीय मूल्यों में तीव्र गति से परिवर्तन होता जा रहा है। अपनी सुविधा के लिए आज के मनुष्य ने विरासत में मिले मूल्यों को व्यक्तिवादी बना दिया है। इससे न तो व्यक्ति का व्यक्ति से, व्यक्ति का समाज से, समुदाय से और राष्ट्र से संबंध रहा गया है और न पारिवारिक मूल्यों से ही। आज का मनुष्य भौगोलिक इकाई पर भौतिकतावादी संदर्भ को ओढ़ता हुआ समृद्धि को प्राप्त कर लेना चाहता है। फिर चाहे उसके लिए उसे अपने परिवार, समाज या राष्ट्र का ही बलिदान क्यों न करना पड़े। बदले मूल्यों के चक्रव्यूह में दाम्पत्य संबध, सामाजिक संबंध और अनेक पारिवारिक संबंध टूट ही नहीं गये बल्कि भौतिकवादी दौड़ ने उन्हें ध्वस्त कर दिया है। आधुनिकीरण, औद्योगीकरण और नगरीकरण की प्रकिया ने सामाजिक जीवन के प्रचलित मानदंड को विघटित कर दिया है। इससे व्यक्ति के वैयक्तिक जीनव में भी परिवर्तन आ गया है। औद्योगीकरण और नगरीकरण के कारण परिवारों के परंपरागत मूल्य तेजी से टूट रहे हैं। नवीन आवश्यकताओं में वृध्दि होने से जीवन की पुरानी व्यवस्था नदारद होने लगी है। आज परिवार की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पतिपत्नी दोनों घर से बाहर काम करने जाते हैं। उनका जीवन इतना व्यस्त हो गया है कि बच्चों और परिवार के अन्य सदस्यों पर अपना ध्यान ही नहीं दे पाते। जीवन में इस व्यस्तता ने पति-पत्नी के मधुर संबंधो में तनाव तथा दूरियाँ उत्पन्न कर दी हैं। अपने आर्थिक विकास में लगे रहने के कारण एक ही परिवार में रहते हुए भी एकदूसरे की परिस्थिति का बोध, सहानुभूति, आत्मीयता का बोध आदि सब धीरे-धीरे समाप्त हो गए हैं। आर्थिक दबाव के चलते अनैतिक साधनों से आवश्यकता पूर्ति को जायज ठहराया जा रहा है। मोहन राकेश ने अपने बहुचर्चित नाटक 'आधे-अधूरे' में बहुत बेबाकी से वर्तमान परिस्थितयों का चित्रण किया है। 'आधे-अधूरे' में वर्तमान युग में टूटते हुए पारिवारिक संबंधों, मध्यमवर्गीय परिवार में कलहपूर्ण वातावरण, विघटन, संत्रास, व्यक्ति के आधे-अधूरे व्यक्तित्व तथा अस्तित्व का तथ्यात्मक सजीव चित्रण किया है। इस नाटक में परिवार के भीतर का संघर्ष बाह्य संबंधों के परिप्रेक्ष्य में विकसित हुआ है। नाटक की स्त्री पात्र सावित्री आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के लिए बाह्य सम्बन्ध बनाते हुए अपने पति की आपत्तियों की अवहेलना करती है। वह किसी तरह पूरे परिवार को चलाती है। इस बात को लेकर परिवार में हमेशा कलहपूर्ण वातावरण बना रहता है। सावित्री को ताने भी सुनना पड़ते हैं। वह घर छोड़ने का निश्चय कर लेती है। वह जगमोहन के पास सहारा लेने जाती है। परिवार के विखंडन का लाभ परपुरुषों द्वारा लिया जाता है। यह उदाहरण दृष्टव्य है :

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"पुरुष दो - याद है कुछ बात की थी तुमने एक बार अपनी कजिन के लिए कहा था, नहीं वह तो मिसेज मल्होत्रा ने कहा था तुमने किसके लिए कहा था।

(स्त्री लड़की की तरफ देखती है) इसके लिए

पुरुष दो - हूँ, हूँ क्या पास किया है इसने, पुरुष दो....हाँ हाँ क्यों नहीं पर तुमने तो, आओगी ही तुम्हीं को बता दूंगा। तुम आओगी ही घर पर दफ्तर की भी कुछ बातें करनी है।"**1**

मध्यमवर्गीय सुविधाभोगी ने नारी को किस गर्हित स्थिति में डाल दिया है, यह सावित्री के चरित्र में देखा जा सकता है। वह कहती है कि वह घर का उत्तरदायित्व निभा रही है, किन्तु यथार्थ यह है कि अपने उत्तरदायित्व की आड़ में वह वासना का खेल खेलना चाहती है। अपना पति उसे इसलिए अधूरा लगता है कि उसे उसमें एक विशिष्ट शख्सियत दिखाई नहीं देती। वह अपने लिए एक पूरा आदमी चाहती है और इसलिए वह कई लागों के संपर्क में आती है। पूरे आदमी के सभी गुण उसे किसी भी एक व्यक्ति में उपलब्ध नहीं होते और वह एक के एक बाद पुरुष को बदलती चली जाती है। जुनेजा सावित्री के इस सुविधा भोग पर कटाक्ष करते हुए कहता है "जो-जो बातें तुमने कहीं हैं, अभी वे गलत नहीं हैं अपने में। लेकिन बाईस साल साथ जीकर जानी हुई बातें वे नहीं हैं। आज से बीस साल पहले भी एक बार लगभग ऐसी ही बातें मैं तुम्हारे मुँह से सुन चुका हूँ तुम्हें याद है ? .....उस दिन पहली बार मैंने तुम्हें इस तरह ढूलते देखा था। तुमने कहा था कि वह (महेंद्र) बहुत लिजलिजा और चिपचिपासा आदमी था है। पर उसे ऐसा बनाने वालों में नाम तब दूसरों के थे .....पर जुनेजा का नाम क्यों नहीं था, कह दूँ यह भी ? .....असल बात यह है कि महेंद्र की जगह इनमें से कोई भी आदमी होता, तुम्हारी जिंदगी में साल दो साल बाद तुम यही महसूस करती कि तुमने एक गलत आदमी से शादी कर ली ? क्योंकि तुम्हारे लिए जीने का मतलब रहा है कि कितना कुछ एक साथ पाकर और कितना कुछ एक साथ ओढ़कर जीना, वह उतना कुछ कभी किसी एक जगह न मिल पाता, इसलिए जिस किसी के साथ भी जिन्दगी शुरू करती तुम हमेशा इतनी ही खाली और इतनी ही बेचैन बनी रहती।"**2**

महेन्द्रनाथ के आवारापन तथा अपने परिवार को चलाने में उसकी अक्षमता के कारण वह अपने ही घर में एक रबड़ के टुकड़े के समान अस्तित्वहीनता का शिकार होकर जीवन बिताने लगा है। नाटक के प्रारम्भ में ही स्पष्ट हो जाता है कि अपव्यय के करण महेन्द्रनाथ के परिवार की दयनीय स्थिति हुई है और महेन्द्रनाथ के निठल्लेपन के कारण ही सावित्री को नौकरी करनी पड़ रही है। आरामतलब, घरघुसरा और निठल्ला होने के कारण महेन्द्रनाथ को कहीं काम नहीं मिल सका और वह बेकार रहकर पत्नी की कमाई की रोटियां तोड़ने लगता है। इसका परिणाम यह होता है कि उसे बार-बार परिवार में अपमान की स्थिति का सामना करना पड़ता है। अपनी इस विशेषता को वह स्वयं इन शब्दों व्यक्त करता है, "अपनी जिन्दगी चौपट करने का जिंमेदार मैं हूँ। तुम्हारी जिंदगी चौपट करने का जिन्मेदार मैं हूँ। इन सबकी जिंदगी बर्बाद करने का जिन्मेदार मैं हूँ। फिर भी मैं इस घर से चिपका हूँ, क्योंकि अन्दर से मैं आरामतलब हूँ, घरघुसरा हूँ। मेरी हड्डियों में जंग लगा है।"**3**

महेन्द्रनाथ इस हीन ग्रंथि के कारण छटपटाता है और ऐसे अवसर ढूंढता है जब अपनी टूटन को सावित्री के अपमान से संतुष्ट कर सके। इसका

परिणाम यह हुआ कि सावित्री तो दूर बच्चे भी उसका निरादर करने लगे और वह अपने को रबड़ का ऐसा टुकड़ा मानने को विवश हो गया, जिसकी उपयोगिता केवल ठप्पा लगाने भर की है। और यही कुंठाएं अंततः उसे घर छोड़ने पर विवश कर देती हैं। किन्तु कब तक। सावित्री के शब्दों में "हर शुक्र सनीचर को यही सब होता है यहाँ।"**4** और सचमुच वह दिल का दौरा पड़ने पर भी लड़खड़ाते हुए वापस लौट आता है। इस प्रकार महेन्द्रनाथ एक ऐसा व्यक्ति है, जिसे परिस्थितियों ने तोड़ डाला है और इसलिए वह नाटक में एक टूटे और थके-हारे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस प्रकार 'आधे-अधूरे' नाटक में टूटते पारिवारिक संबंधों की कहानी बड़े ही सजीव एवं यथार्थ ढंग से कही गई है। महेन्द्रनाथ-सावित्री और परिवार एक प्रतीक माध्यम है उस सबका जो अनवरत टूटकर बिखर जाना चाहता है। अर्थ और काम-पूर्ति के साधनों के अभाव में आज के मध्य और निम्न मध्य वित्तीय स्थितिवाले घर परिवार में घर के पति-पत्नी में रात-दिन चख-चख या खींचा-तानी होती रहती है। उसका सीधा प्रभाव घर के बच्चों के मन-मस्तिष्क पर भी पड़ता है। फलतः वे भी उसी प्रकार की कटाव, तनाव और बिखराव लाने वाली प्रवृतियों का शिकार हो जाते है। टूटन की इस वैयक्तिक समस्या को एक परिवार के माध्यम से नाटककार ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 आधे-अधूरे, मोहन राकेश, पृष्ठ 53
2 आधे-अधूरे, मोहन राकेश, पृष्ठ 88-89
3 आधे-अधूरे, मोहन राकेश, पृष्ठ 36
4 आधे-अधूरे, मोहन राकेश, पृष्ठ 39